हिन्दखोज: अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका, ISSN: 3048-9873
खंड4, अंक 1, जनवरी – जून, 2026

"शरद सिंह की कहानियों में स्त्री पात्र: एक अध्ययन"

नेहा देवी अहिरवार[1], राजाराम परते[2]

[1]हिंदी अध्ययनशाला एवं शोध केंद्र महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर (म.प्र.)
[2]प्राध्यापक शासकीय महाविद्यालय, बिजावर, जिला- छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

शरद सिंह का साहित्य स्त्री केंद्रित है । स्त्री की अस्मिता स्त्री की स्वतंत्रता के लिए लेखिका ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से आधुनिकता और पारंपरिक रूढ़िग्रस्त समाज के बीच जूझने वाली स्त्री का चित्रण किया है । लेखिका ने जिन स्त्री पात्रों को अपनी कहानियों का माध्यम बनाया है उन स्त्रियों की समस्याएं एवं उनकी संवेदनाओं को इस शोध कार्य में बताया गया है। इस शोध पत्र में शरद सिंह की कहानियों में दिए गए स्त्री पात्रों का अध्ययन किया गया है। 'कुसुमाबाई' शरद सिंह की कहानी 'गीला अंधेरा' से लिया गया है यह एक ऐसी ग्रामीण स्त्री है जो सरपंच तो चुन ली जाती है लेकिन उसके सारे अधिकार उसके पति की मुट्ठी में रहते हैं स्त्रीयों के विरुद्ध होने वाले अपराध को दिखाया गया है। 'पिंकू की मम्मी' स्त्री पात्र शरद सिंह की कहानी जलते हुए शहर से लिया है। यह स्त्री एक मिलनसार स्त्री है यह किसी से भी थोड़े समय में पहचान बना लेती है और उसकी दोस्त बन जाती है। दूसरा स्त्री पात्र जया है जो शरद सिंह की कहानी 'वह बुर्केवाली' से लिया गया है, इस कहानी में दो पात्र हैं- जया और बर्केवाली औरत, इन दोनों के माध्यम से बताया गया है कि पुरुष वर्ग भरी रेलगाड़ियों में रेलवे स्टेशन पर महिलाओं का किस तरह से फायदा उठाते है और धर्म और पर्दा प्रथा की आड़ में महिलाओं को कैद करके उनका शोषण करते हैं।इसी प्रकार जया की 'मौसेरी बहन' स्त्री पात्र के बारे मैं बताया गया है की कैसे एक महिला के गर्भ में लड़की होने पर उसको गर्भपात के लिए मजबूर किया जाता है, चार बार उसका गर्भपात करवा दिया जाता है और पांचवी बार भी जब उसके पेट में बेटी का जन्म होता है तो उसको गर्भपात करवाने के लिए उसके परिवार वाले मजबूर करते हैं लेकिन वह गर्भपात करवाना नहीं चाहती है इसी कारण वह दुखी रहती है। इस शोध पत्र में स्त्री पात्र- सुधा और देवी मौसी की समस्या को भी दिखाया गया है।

मूल शब्द- शरद सिंह, स्त्री विमर्श, औरत, परिवार, कहानी, स्त्री पात्र ।

प्रस्तावना

आधुनिक हिंदी कथा लेखन के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने वाली शरद सिंह का जन्म मध्य प्रदेश के एक छोटे से जिले पन्ना में 29 नवंबर 1963 को हुआ था, जब वह साल भर की थी तभी उनके सिर से उनके पिता श्री रामधारी सिंह का साया उठ गया। उनका तथा उनकी बड़ी बहिन वर्षा का पालन पोषण उनकी मां विद्यावती सिंह ने किया जो अपने समय की ख्याति प्राप्त लेखिका एवं कवित्री रही है। जुलाई 1977 में शरद जी की पहली कहानी के 'भिखारिन'शीर्षक से दैनिक जागरण,रीवा में प्रकाशित हुई स्त्री विमर्श पर उनकी पहली कहानी 'कालाचांद' जबलपुर के दैनिक नवीन दुनिया के 'नारी निकुंज' परिशिष्ट में अप्रैल 1983 में प्रकाशित हुई थी राष्ट्रीय स्तर पर उनकी प्रथम चर्चित कहानी 'गीला अंधेरा' थी, जो मई 1996 में भारतीय भाषा परिषद कोलकाता की पत्रिका वागर्थ में प्रकाशित हुई थी।

शरद सिंह इसी कहैं।यह एक ऐसी ग्रामीण स्त्री 'कुसुमाबाई' की कहानी है जो सरपंच तो चुन ली जाती है लेकिन उसके सारे अधिकार उसके पति की मुट्ठी में रहते हैं स्त्रीयों के विरुद्ध होने वाले अपराध को दिखाया गया है। इस कहानी में बुंदेलखंड का परिदृश्य और बुंदेली बोली के संवाद है। कहानी को सच्चे अर्थों में अपनी पहली कहानी मानती हैं।इस शोध पत्र में शरद सिंह की कहानियों के स्त्री पात्रों पर अध्ययन किया गया है। कुसुमाबाई, पिंकू की मम्मी, जया, रोमीभट्टाचार्य, बुर्केवाली औरत, जया की मौसेरी बहन, सुधा, देवी मौसी, इन पत्रों का अध्ययन किया गया है।

शरद सिंह की कहानियों के स्त्री पात्र –

1.पिंकू की मम्मी -
पिंकू की मम्मी नाम की स्त्री पात्र शरद सिंह की कहानी "जलती हुई शहर में" कहानी से लिया गया है इस कहानी में पिंकू की मम्मी के नाम से पहचाने जाने वाली औरत का वर्णन किया गया है।वह एक गृहिणी है। हँसमुख और मिलनसार। हर नए किराएदार से दोस्ती करने में उसे कुछ पल ही लगते हैं। लेखिका कहती है कि वह मेरी भी सहेली बन गई। पिकू की मम्मी नाम है उसका। लेखिका कहती है, है न अजीब नाम ? लेखिका ने जब उससे उसका नाम पूछा तो उसने एक प्यारी-सी मुस्कुराहट अपने होठों पर

बिखेरते हुए कहा, **"इस बिल्डिंग में सब मुझे पिकू की मम्मी कह कर बुलाते हैं, आप भी मुझे इसी नाम से पुकारिएगा, वरना मैं खुद भी समझ नहीं सकूँगी कि आप मुझे पुकार रही हैं।"**
लेखिका कहती हैं कि इस औरत को अपने नाम के खो जाने का कोई दुख नहीं है, आम भारतीय औरतों की तरह ये भी इसकी माँ, उसकी बीवी के रूप में ढल चुकी है। ऐसी औरतें बड़ी एडजेस्टिव चीज होती हैं। इन्हें तो अपनी सौत से भी गुरेज नहीं रहता होगा, बशर्ते इनका पति इनका ओहदा न छीने और सौत से ब्याह न रचाए।

लेखिका इन शब्दों के माध्यम से कहती है इन महिलाओं को कुछ काम तो होता नहीं है एक दूसरे के घर में जानकारी एकत्रित करती रहती हैं कि किनके घर में क्या चल रहा है। लेखिका कहती है कि ऐसी औरतें हर जगह एडजेस्ट हो जाती हैं यहां तक कि उनके पति सौतन भी ले आए तो उनको कोई परेशानी नहीं होगी बस उनकी यह शर्त रहती है कि इनका पति उनकी जगह न छीने और सौत से ब्याह ना करें।

"यहाँ नौकर आसानी से और कम कीमत पर मिल जाते हैं। बस, उन पर ज़रा नज़र रखनी होती है। हाथ की सफाई में भी माहिर होते हैं ये।" पिकू की मम्मी ने जानकारी देते हुए कहा।

"यहीं तो उनकी बस्ती है, अपनी विल्डिंग के पीछे। कहीं दूर से थोड़े ही आना होता है । उन्हें आपके लिए भी एक तय कर दूँ? आप तो अकेली रहती हैं, किसी लड़की को तय कर दूँगी। वह सारा काम कर दिया करेगी।" वह बोली।

"किसी लड़की को ही क्यों? कोई लड़का क्यों नहीं?" मैंने चुहल करते हुए प्रश्न किया।

पिंकू की मम्मी पात्र उस बिल्डिंग में आई हुई एक किराएदार को लड़की नौकरानी रखने की सलाह देती है और बताती है कि शहर में रहने वाली झुग्गी झोपड़ियां की जो लड़कियां काम करने के लिए आती हैं वह कम पैसे में काम करती हैं लेकिन उन पर नजर बनाना जरूरी रहती है वरना यह मौका देखते ही सफाई के समय चोरी करके भाग जाती है। तो वह किराएदार बोलती है कि अगर लड़का काम पर रख लूं तो कोई परेशानी है क्या इस पर पिंकू की मम्मी कहती है कि यहां पर जो एक झुग्गी झोपड़ी के लड़के काम करने के लिए आते हैं यह लड़के 10 -12 वर्ष के दिखते हैं लेकिन उनकी हरकतें 20-25 वर्ष के लड़कों की होती हैं ये ना जाने कब क्या हरकत कर बैठे इनका कोई भरोसा नहीं कर सकते है। और पास की बिल्डिंग में हुई सवा साल पहले एक घटना के बारे में बताती है की यही एक पास वाली बिल्डिंग में एक नौकर ने अपनी मालकिन के साथ जबरदस्ती की थी।और अंत में लड़की नौकरानी रखने की सलाह देती हैं कि आपके लिए तो लड़की ही सही रहेगी।

2.जया-
शरद सिंह की कहानी "वह बुर्के वाली" में लेखिका ने जया, रोमी भट्टाचार्य, बुर्केवाली औरत, खाला, जया की मौसेरी बहन,इन सभी स्त्री पात्रों का विस्तार से वर्णन किया गया है। जया नाम की स्त्री पात्र के द्वारा बिलासपुर से भोपाल चलने वाली पैसेंजर गाड़ी से कटनी जंक्शन से बीना जंक्शन के बीच जितने भी स्टेशन पढ़ते हैं उसके बीच में स्त्रियों को सफर करने मैं आने वाली परेशानियों के बारे में लेखिका ने लिखा है।

जया ने घुटनों तक पाँव उठाते -हुए, हायों के बल अपने शरीर को ऊपर खींचते हुए सीढ़ी पर चढ़ने का प्रयास किया, तभी उसे पहले अपनी पीठ और फिर अपने कूल्हे पर हथेलियों का आभास हुआ जो उसे ऊपर की ओर धकेल रही थीं। ये हथेलियाँ उस व्यक्ति की थीं जो उसे पहुँचाने आया था। उसने जया की मदद करना चाही था या अवसर का लाभ उठाया था अथवा दोनों ही बातें थीं, जया ने अधिक नहीं सोचा, वरना उसे अपनी लाचारी पर रोना आने लगता।

यह पंक्तियां शरद सिंह की कहानी "वह बुर्केवाली"से ली गई है जिसमें रेलगाड़ी में यात्रा करते समय कटनी जंक्शन से बीना जंक्शन के बीच जितने स्टेशन पड़ते हैं उनमें बोगी से निकल पाना असंभव जान पड़ता है भीड़ की बड़ी सी चट्टान बोगी की गुफा का मुख ढांके रखती है। बोगी का दरवाजा ही क्यों बोगी के भीतर पूरा गलियारा ठूंस-ठूंस कर भर जाता है। ऐसी भीड़ में यात्रा कर रही महिलाएं सुरक्षित नहीं रहती हैं इन महिलाओं के शरीर को पुरुष गलत तरीके से स्पष्ट करते हैं और इस भीड़ का फायदा उठते हैं कभी मदद करने के बहाने तो कभी सीट देने की बहनें से। लेखिका लिखती है कि जब मैं बिलासपुर के लिए यात्रा कर रही थी तब मैं बोगी के पीछे वाले दरवाजे से चढ़ती हूं तो मुझे पीछे से किसी के सहारा देने का अनुभव होता है, वह व्यक्ति कोई और नहीं होता जो उसे पहुंचाने के लिए आता है वही व्यक्ति होता है, वह व्यक्ति जया की मदद करना चाहता था या उसका फायदा उठाना इसके बारे में जया ने नहीं सोचा वरना उसे बुरा लगता है। और इस बोगी में यात्रा करने वाली मजदूर औरतों के बारे में भी बताया है कि यह औरतें गाड़ी रूकते ही ऐसे अन्दर घुसती हैं कि वे अपने आप को पहचानतीं नहीं है, कि वे कौन हैं महिला या पुरुष उन्हें गाड़ी में प्रवेश करते समय पुरूषों से घिस-घिस कर निकलने से कोई फर्क नहीं पड़ता है,ऐसा लगता है जैसे जिम्मेदारियों के बोझ में अपने आपको भूल चुकी हैं अपने अन्दर की औरत जात को मार चुकी हैं।

जया अपने जिन दिनों स्नात के प्रथम वर्ष में अध्ययन कर रही थी, उन दिनों में कक्षा में एक श्री लड़की आई थी, 'रोमी भट्टाचार्य'।

3.**रोमी भट्टाचार्य-** नाम की लड़की थी जो **अनिकेत** नाम के लड़के के साथ भाग जाती है लेखिका जया के माध्यम से कहती है क्या उसे एक पल को भी अपनी सालाना परीक्षा का विचार नहीं आया और वह कहती है की लड़कियां कच्ची आयु में किसी के प्रेम में इतनी पागल कैसे हो जाती हैं? रोमी पागल ही तो थी जो अपना घर छोड़कर अपने मां-बाप को त्याग कर अनिकेत के साथ भाग खड़ी हुई।

4.जया और बुर्केवाली औरत - यह स्त्री पात्र शरद सिंह की कहानी "वह बुर्केवाली" से लिये गये है।

"हम औरतों का भाग्य इतना निर्दयी क्यों होता है? हम अपनी इच्छानुसार जी भी नहीं सकती हैं।"जया ने दुखी मन से कहा।

"निक़ाह के बाद से ही इन बातों पर गौर करना मैंने छोड़ दिया है। मेरे शौहर भी यही चाहते हैं कि मैं खुद को क़िताबी दुनिया से दूर कर लूँ।"बुर्केवाली ने कहा।
यह पंक्तियां शरद सिंह की कहानी वह बुर्केवाली से ली गई है जिसमें बिलासपुर स्टेशन की घटना का वर्णन है। बिलासपुर के स्टेशन पर रेलगाड़ी की प्रतीक्षा कर रही थी जो गाड़ी 2 घंटे लेट आने वाली थी उसी प्रतीक्षा के समय जया की मुलाकात एक बुर्केवाली से होती है। बुर्के वाली के साथ 3 मर्द भी थे जो उसकी रिश्तेदार थे। बुर्के वाली से जया पूछती है आप भोपाल जा रही है? बर्केवाली का जवाब आता है "नहीं कटनी" बुर्के वाली संक्षिप्त का उत्तर देती है उसका उत्तर इतना धीमा होता है की जया अगर ध्यान से ना सुनती तो उसको कुछ सुनाई नहीं देता। उन दोनों के मध्य में भी बात चीत होती रहती हैं।

हाँ, आप ठीक कह रही हैं। हम औरतें अपनी स्वतंत्रता के अर्थ वहुत पहले खो चुकी हैं... हम साथी भी चाहती हैं और स्वतंत्रता भी, हम रास्ता दिखाने वाला भी चाहती हैं और खो जाना भी।" जया बुर्केवाली की बातों में उलझती जा रही थी। उसे लग रहा था कि वह बुर्केवाली नहीं अपितु बुर्केवाली के भीतर छिपी औरत से बातें कर रही है। ये पंक्तियां शरद सिंह की कहानी वह बुर्के वाली से ली गई है जिसमें लेखिका ने बुर्के के अंदर छिपी हुई औरत के दर्द को दिखाया है, लेखिका कहती है की इन औरतों को कभी धर्म के नाम से कभी इस्लाम के नाम पर कभी बुर्के में तो कभी पर्दा के पीछे छुपा कर रखा जाता है उन औरतो और उनकी आजादी को जिस आजादी को वे कभी जी नहीं सकतीं ना जी पा रहीं हैं।

नहीं, आप फिर भी मुझसे कई मायने में बेहतर हालत में हैं। आप अपनी मर्जी से कहीं भी आ-जा सकती हैं, कहीं भी उठ-बैठ सकती हैं, किसी से भी बेझिझक बातें कर सकती हैं, अपनी तालीम को एक्सपोज़ कर सकती हैं, में ऐसा नहीं कर सकती हूँ... मैं तो उँगली के इशारों पर नाचने वाली कठपुतली बन गई हूँ। पहलेमेरी डोर वालिद के हाथों रही और अब शौहर के हाथों सौंपी जा चुकी है।" बुर्केवाली ने कहा। पीड़ा उसके भीतर रह-रह कर करवट बदल रही थी।

यह पंक्तियां शरद सिंह की कहानी "वह बुर्केवाली" से ली गई है जिसमें बुर्के वाली एक पढ़ी लिखी औरत है और वह अपनी आजादी से नहीं जी पा रही हैं बुर्केवाली कुर्रतुल-ऐन-हैदर की कहानियों पर डॉक्टरेट कर चुकी है वह भी उनकी कहानियों की औरतों के बजूद पर ? लेखिका कहती है कि जो महिला महिलाओं के वजूद पर पीएचडी भी किए हुए है फिर भी वह अपनी मर्जी से नहीं रह सकती अपने अधिकारों के लिए नहीं लड़ सकती है वह अपने शौहर के हुक्म की फरमाइशें पूरी करने पर मजबूर है।

"हर धर्म, हर समाज में औरतों का यही हाल है, औरत के वास्तविक अस्तित्व को वर्जनाओं के पर्दे के पीछे छिपा दिया जाता है, बाहर से हम जो दिखाई देती हैं, वह होती नहीं हैं। कितना दोहरापन जीना पड़ता है हमें! हाथ भर का घूँघट हो या न हो, क्या फ़र्क़ पड़ता है? अदृश्य चादरें हमें ढाँके रहती हैं।"जया ने सहमति जताते हुए कहा।
ये पंक्ति भी शरद सिंह की कहानी "वह बुर्केवाली" से ली जिसमें बुर्के वाली जया से कहती है जया धर्म या समाज हम औरतों के लिए कोई मायने नहीं रखता है, बुर्का या घूँघट तो बस एक भौतिक प्रतीक है, जंजीरें तो हमारे मन और आत्मा को जकड़े रखती हैं और हमें अपने आप से भी आँखें मिलाने नहीं देती हैं।आप भी सोच रही होंगी कि ये मोहतरमा बातें तो बड़ी-बड़ी कर रही हैं लेकिन इन बातों को जीने का हौसला इनमें खुद नहीं है, सच ही तो है ये!... दरअसल बात ये है कि मैंने आज़ादी को ख्यालों में जिया है, हक्कीकत में नहीं, लेकिन आप जो आज़ादी को महसूस कर चुकी हैं, इसे कभी अपने हाथ से फिसलने मत दीजिएगा, बड़ी घुटन होगी इसके बिना। आप जी नहीं सकेंगी।

5.जया की मौसेरी बहन - यह स्त्री पात्र शरद सिंह की कहानी "वह बुर्केवाली"से लिया गया है।
"बकरा ले कर क्या करेगी, विट्टो! बकरे का भविष्य तो कसाईखाने में कैद रहता है। उफ ! हम इंसान भी कितने खुदगर्ज हैं। इंसान की औलाद हो तो मर्दानी चाहिए और गाय-बकरी की औलाद हो तो जनानी। हम सिर्फ अपने फ़ायदे देखते हैं, किसी की जिंदगी या वजूद नहीं।"

यह पंक्तियां शरद सिंह की कहानी "वह बुर्केवाली" से ली गई हैं जिसमें मैं जया की मौसेरी बहन के बारे में लिखा गया है जो कभी जया की अतरंग सहेली भी हुआ करती थी वह पांचवीं बार गर्भवती थी वह अपने मायकेआई हुई थी जया उससे मिलने गई तो वह जया से गले से लगकर देर तक रोती रही जया के पूछने पर उसने बताया कि उसके ससुराल वाले इस बार भी इस जाँच करवाने के

लिए बाध्य कर रहे हैं कि उसके गर्भ में लड़का है या लड़की? यदि लड़की है तो इस बार भी गर्भपात करना होगा। वह हताश से टूटती हुई बोलती है -"क्या मैं इंसान नहीं हूँ? क्या मुझमें भावना नहीं हैं? पहले गर्भरोपड़ और फिर गर्भपात मानो कोई मशीन खेल हो और कहती है कि अब तो मेरे पति मुझे प्यार से भी छूते हैं तो मेरे शरीर में कांटे चुभने लगते हैं।सची बिट्टू अब नहीं सहा जाता! देखना, एक दिन मैं आत्महत्या कर लूंगी।" जय समझती है और कहती है ऐसा नहीं कहते पगली! हिम्मत से काम लें! और जया की मौसी की बहन कहती है कि हिम्मत ही तो टूट चुकी है मेरी और वह रोती रहती है और जया उसको समझती है जया को समझाते हुए एक बात याद आती है कि जब मैंने अपनी खाला से बकरी का बच्चा मंगाया था तो मेरी खाला ने मेरे से कहा था बकरी होगी तो जरूर रख लेना तो जया ने कहां था कि बकरी हो या बकरा बच्चा तो बच्चा होता है तू कल ने कहा था बकरा तो पगली कसाई के घर जाता है उसका तू क्या करेगी अगर बकरी होगी तो जरूर दे दूंगी। लेखिका बताती है कि हम इंसान भी कितने खुदगर्ज हैं इंसान की औलाद हो तो मर्दानी चाहिए और गाय बकरी की औलाद हो तो जनानी। हम सिर्फ अपने फायदे दिखते हैं किसी की जिंदगी या वजूद नहीं।

6.**सुधा-** यह स्त्री पात्र शरद सिंह की कहानी "छिपी हुई औरत" से लिया गया है।
"मैं कहती थी ना कि डॉक्टरों के पास जाओ तो वे यहाँ-वहाँ नचाते फिरते हैं,ये जाँच कराओं,वो जाँच कराओं बस्स!"देवी मौसी झुंझलाकर बोली थीं।
सुधा घर की जिम्मेदारी संभालते हुए इतनी कमजोर हो गई है पिछले कुछ सप्ताह से उसका रक्तचाप बढ़ा हुआ रहता है कभी-कभी उसे चक्कर भी आने लगते हैं चिकित्सक उसको पलंग तोड़ आराम करने की सलाह देता है।चिकित्सा का कहना है कि यदि तुम आराम नहीं करोगी तो किसी दिन अधिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है लेकिन सुधा के लिए आराम करना संभव नहीं है वह आराम करना तो मानो जानती ही नहीं है यह उसे अपनी देवी मोसी से विरासत में मिला है। ऐसा सुधा कहती है की देवी मौसी कहती है कि स्त्री परेशानी से घिरी होती है उनके सामने और दो-तीन परेशानियां आ जाए तो स्त्री को फर्क नहीं पड़ता है।

सुधा बताती है कुछ वर्ष पहले देवी मोसी की तबीयत खराब हो में गई थी देवी मौसी ने किसी को भी नहीं बताया था जब बाथरूम में खून आने लगा तब उसने चिकित्सक को दिखाया जांच होने पर पता चला की देवी मौसी को पथरी है। देवी मौसी कहती है कि यह डॉक्टर की फालतू के चोचले है मुझे पथरी कैसे हो सकती है मैं ना तो कभी टमाटर खातीं हूं, और ना पालक और देवी मौसी दबा नहीं करवाना चाहती है। बाद में देवी मौसी क ऑपरेशन भी हो जाता है पथरी भी निकल जाती है और देवी मौसी को कोई परेशानी भी नहीं होती है।

देवी मौसी - यह स्त्री पात्र शरद सिंह की कहानी "छिपी हुई औरत" से लिया गया है। इस पात्र के माध्यम से लेखिका बताती है कि महिलाएं अपने पहले प्रेम को अपने अंदर दबा कर रखती हैं अपने माता-पिता के सम्मान के लिए और दूसरी शादी करने के लिए तैयार हो जाती है। और जीवन भर अपने वैवाहिक संबंध में कभी भी किसी भी प्रकार की शिकायत नहीं करती है, और अपने माता-पिता और अपने पति की खुशी में खुश रहती है।यह कहानी एक ऐसी औरत की है जो अपने पति को भी कभी दुख नहीं पहुंचाती और अपने प्रेमी की दी हुई वस्तुओं को अपने पति और अपनी गोद ली हुई बेटी को उन वस्तुओं के बारे में पता नहीं लगने देती हैं और अपने प्रेमी की दी हुई वस्तुओं को संभाल कर रखती है और उसे अपना देवता मानती है।

निष्कर्ष

शरद सिंह ने अपनी कहानियों में आधुनिक समाज में से स्त्री पात्रों को सीधे उठाया है और उनकी समस्याओं को बिना किसी बदलाव के वही रूप अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के सामने रखा है। इन कहानियों के माध्यम से लेखिका बताना चाहती है कि जिस तरह से ये स्त्री पात्र पुरुषों की भावनाओं को समझती हैं,उनका साथ देती, उनका सम्मान करती हैं, वह स्त्रीयां भी चाहती हैं की पुरुष वर्ग भी उन स्त्रियों की भावनाओं को समझे, उनका साथ दें और उनका सम्मान करें।

संदर्भ ग्रंथ

[1]. सिंह शरद, बाबा फरीद अब नहीं आते, सामाजिक प्रकाशन नई दिल्ली-110002,भारत संस्करण: 2023, पृष्ठ संख्या-70-76
[2]. सिंह शरद, छिपी हुई औरत और अन्य कहानियाँ, वाणी प्रकाशन, आवृत्ति संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या-9-21
[3]. सिंह शरद, छिपी हुई औरत और अन्य कहानियाँ, वाणी प्रकाशन, आवृत्ति संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या-22-41
[4]. सिंह शरद, छिपी हुई औरत और अन्य कहानियाँ, वाणी प्रकाशन, आवृत्ति संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या-42-60